# गुरुका महत्त्व, प्रकार एवं गुरुमंत्र

## अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)


- **भूमिका** ७
- **संस्कृत भाषानुरूप हिंदी भाषाके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन !** ८
- **ग्रंथके ज्ञानसंबंधी सूक्ष्म-विश्वके 'एक विद्वान'द्वारा भाष्य** ९

**१. गुरु** ११

१ अ. व्युत्पत्ति — १ ई. गुरुका स्वरूप ११

१ आ. व्याख्या एवं अर्थ — १ उ. गुरुतत्त्व ११

१ इ. इतिहास १२

**२. गुरुका महत्त्व** १४

२ अ. गुरुमहिमा १४

२ आ. शिक्षणशास्त्रके दृष्टिकोणसे — २ इ. मानसशास्त्रके दृष्टिकोणसे २६

२ ई. अध्यात्मशास्त्रके दृष्टिकोणसे २७

* शिष्यको माध्यम न बनाकर स्वयंप्रकाशी करना २८

* गुरुके अस्तित्वसे शिष्यकी उन्नति होना ३०

* देहत्यागके पश्चात भी सिखाना ३६

* गुरुके अध्यात्मस्तरीय महत्त्वको सिद्ध करनेवाले वैज्ञानिक प्रयोग तथा साधकोंका सूक्ष्म-ज्ञानविषयक परीक्षण ३६

**३. गुरुके प्रकार** ४९

* रूपानुसार प्रकार एवं गुरु न होना ४९

* गुरु, सद्गुरु एवं परात्परगुरु — * नाम ही गुरु है ५१

* गुरुके सगुण रूपकी अपेक्षा निर्गुण रूप श्रेष्ठ है ६२

* ढोंगी अथवा अनाधिकारी गुरु ६२

**४. गुरुके लक्षण** **६४**

* ज्ञानी * शिष्यको ज्ञान देनेकी उत्कंठा ६४

* शिष्यकी पात्रतानुसार सिखाना एवं विचार करनेके लिए प्रवृत्त करना ६६

* शिष्यद्वारा साधना करवानेकी क्षमता ७१

**५. गुरुदीक्षा, अनुग्रह, गुरुवाक्य एवं गुरुकुंजी** **७२**

**६. गुरुमंत्र** **७५**

* अर्थ * महत्त्व ७५

* दूसरोंका नामजप (साधना) आरंभ करवाने हेतु गुरुमें आवश्यक घटक ७७

* नाम देनेवालेका आध्यात्मिक स्तर एवं नामांतर्गत शब्दोंका महत्त्व ७८

* 'गुरुमंत्रसंबंधी भ्रांतियां ७८

* गुरुद्वारा दिए गुरुमंत्रका सामर्थ्य ८३

* गुरुमंत्र एक ही गुरुतत्त्वसे मिलना ८४

* गुरुमंत्र देनेकी विधि एवं उस समय शिष्यको होनेवाली अनुभूति ८४

* गुरुमंत्र देनेसे गुरुकी शक्ति न घटना ८५

* 'गुरुमंत्र गुप्त रखना चाहिए', ऐसा क्यों कहते हैं ? ८५

**७. गुरुचरित्र** **८७**

७ अ. गुरुमहिमा ७ इ. गुरुभक्तिका महत्त्व ८७

७ आ. गुरुमंत्र ७ ई. गुरुसेवा एवं गुरुकृपा ८७

**८. गुरुगीता** **८८**

८ अ. गुरुगीता महत्त्व ८८

८ आ. गुरु शब्दकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ ८८

८ इ. गुरुका वर्णन ८ ई. गुरुका महत्त्व ८८

८ उ. शिष्य ८ ऊ. फल ९१

**९. कालकी आवश्यकता समझकर राष्ट्र तथा धर्मरक्षाकी शिक्षा देना,**
**यह गुरुका वर्तमान कर्तव्य !** **९३**
➢ **गुरुके विषयमें आलोचना अथवा अनुचित विचार एवं उनका खंडन !** **१०१**

## भूमिका

संत कबीरने सद्गुरुकी महिमाका वर्णन करते हुए कहा है,
बिना गुरु के गति नहीं, गुरु बिन मिले न ज्ञान ।
निगुरा इस संसार में, जैसे सूकर, श्वान ।।

वर्तमानमें अधिकांश लोगोंका दैनिक जीवन भागदौड तथा समस्याओंसे ग्रसित है । जीवनमें मानसिक शांति एवं आनंद प्राप्त करनेके लिए कौनसी साधना निश्चित रूपसे कैसे करें, इसका जो यथार्थ ज्ञान कराते हैं, वे हैं गुरु ! किंतु तुकाराम महाराजके कथनानुसार आज समाजको गुरुके महत्त्वका विस्मरण होते जा रहा है । प्रस्तुत ग्रंथमें वर्णित गुरुमहिमा पढकर जिज्ञासु एवं साधकोंमें गुरुके प्रति श्रद्धा निर्मित होगी ।

शिष्यके जीवनमें गुरुका अनन्य महत्त्व है । गुरुके बिना उसे ईश्वरप्राप्ति होना संभव ही नहीं । गुरुका भक्तवत्सल रूप, दयालु दृष्टि, शिष्यपर कृपा करनेके माध्यम इत्यादि विभिन्न पहलुओंद्वारा प्रस्तुत ग्रंथसे शिष्यको गुरुके अंतरंगके वास्तविक दर्शन होंगे । इससे गुरुके प्रति शिष्यकी भक्ति दृढ होगी एवं उसे गुरुके अस्तित्वका अधिकाधिक लाभ लेना संभव होगा ।

शिष्य गुरुका महत्त्व जानता है; क्योंकि उसे गुरुके आध्यात्मिक सामर्थ्यकी प्रतीति होती है । किंतु वर्तमान विज्ञानयुगके साधारण व्यक्तिको प्रत्येक विषय वैज्ञानिक मापदंडोंपर सिद्ध करनेपर ही सत्य लगता है ! इसीसे उसका अध्यात्मपर विश्वास होता है तथा वह साधना आरंभ करता है । इसलिए हमने हमारे गुरु प.पू. भक्तराज महाराजजीके छायाचित्रके संदर्भमें 'पिप' नामक वैज्ञानिक प्रणालीका उपयोग कर विविध परीक्षण किए । विज्ञानके आधारसे भी गुरुकी श्रेष्ठता कैसे सिद्ध होती है, इस संदर्भमें नवीनतम विवेचन, प्रस्तुत ग्रंथकी एक निराली विशेषता है ।

गुरु, सद्गुरु एवं परात्परगुरुमें क्या अंतर है ? ढोंगी गुरुको कैसे पहचानें ? खरे गुरुके क्या लक्षण हैं ? गुरुमंत्रसे संबंधित अनुचित धारणाएं कौनसी हैं ? वास्तविक गुरुमंत्र कौनसा होता है ? आदि मार्गदर्शन भी इस ग्रंथमें प्रस्तुत है ।

जिस प्रकार साधकोंको साधना बताना गुरुका धर्म है, उसी प्रकार राष्ट्र एवं धर्मकी रक्षा हेतु

समाजको जागृत करना, यह भी गुरुका ही धर्म है । आर्य चाणक्य, समर्थ रामदासस्वामी जैसे गुरुओंके आदर्श हमारे समक्ष हैं । वर्तमानमें हमारे राष्ट्र एवं धर्मकी स्थिति अत्यंत दयनीय है । कालकी आवश्यकताको समझकर राष्ट्र एवं धर्मकी रक्षा हेतु साधनाकी सीख शिष्यों तथा समाजको देना, गुरुका सांप्रतकालीन कर्तव्य है । इससे संबंधित दिशादर्शन भी ग्रंथमें प्रस्तुत है ।

इस ग्रंथमें दिए मार्गदर्शनसे जिज्ञासुओंकी साधकतक, साधकोंकी शिष्यतक तथा शिष्योंकी गुरुतक प्रगति हो, यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**